॥ ओ३म ॥

हिन्दुओं की लूट

लेखक :-

स्वामी शिवानन्द सरस्वती

।। ओ३म् ।।

हिन्दुओं की लूट

लेखक :-

स्वामी शिवानन्द सरस्वती

लेखक :-
स्वामी शिवानन्द सरस्वती
फोन न० 09410049191
महर्षि दयानन्द वैदिक संन्यास आश्रम
शिकार पुर रोड़ नया गाँव बुलन्द शहर उ०प्र०

प्रथम संस्करण :- १००० दिसम्बर २००८ ईसवीं

मूल्य १० रुपये मात्र

पुस्तक प्राप्ति स्थान :-

१- महर्षि दयानन्द वैदिक संन्यास आश्रम
शिकार पुर रोड़ नया गाँव बुलन्द शहर उ०प्र०

२- आर्य समाज मन्दिर, दादरी जिला गौतम बुद्ध नगर उ०प्र०

३- आर्य समाज, आर्यनगर ,पहाड़गंज नई दिल्ली -११००५५

हिन्दुओं की लूट

महर्षि कपिल ने अपनी अनुपम रचना सांख्य दर्शन में लिखा है कि -

उपेदेश्योपदेष्टृत्वात् तत्सिद्धिः इतरथान्धपरम्परा।

इसका अर्थ यह है कि जब उपदेश करने वाला और उपदेश को सुनने वाला ये दोनों ही योग्य होते हैं तो उपदेश सफल होता है। और इन दोनों में एक भी अयोग्य है तो उपदेश सफल नहीं होता। मान लो कि उपदेशक विद्वान् व्यक्ति है,परन्तु श्रोता इतने पढ़े लिखे समझदार नहीं हैं जो कि उपदेशक की बात को समझ सकें। या कभी ऐसा भी होता है कि श्रोता गण सब अच्छे पढ़े लिखे हैं, और वक्ता इतना पढ़ा लिखा नहीं है। वक्ता की इतनी योग्यता नहीं हैं कि वह गूढ़ विषय को श्रोताओं के मस्तिष्क में उतार दे। ऐसी परिस्थिति में यह होता है कि वक्ता कहता है कुछ और श्रोता समझते हैं और कुछ। ऐसे ना समझ समाज में अन्ध परम्पराएं चल पड़ती हैं और सारा समाज अधोगति को प्राप्त होता है।

संसार में पाखण्ड या अन्ध परम्पराओं के चलने के मुख्य रूप से दो कारण होते हैं। पहला कारण है किसी शब्द या वाक्य के अर्थ को सही रूप में न समझना। दूसरा कारण है, स्वार्थ। इन दोनों में स्वार्थ अधिक खतरनाक होता है। जो व्यक्ति ना समझ होने के कारण पाखण्ड करता है उसे कोई सज्जन समझा दे तो वह उस कार्य के सही रूप को स्वीकार

करके पाखण्ड़ को सदा के लिए छोड़ देता है। परन्तु स्वार्थी मनुष्य को कितना भी समझाओ वह मानने को तैयार नहीं है। क्योंकि उसकी कई प्रकार की पूर्ति केवल उस पाखण्ड से होती हैं।

जैसे- उस पाखण्ड के करने से उसे बिना परिश्रम के धन प्राप्त होता है। जिससे उसकी सारी सांसारिक आवश्यकताएं पूरी होती हैं। दूसरी बात यह भी है कि इन अन्धे लोगों में उसकी पूजा खूब होती है। उसे लोग देवता मानकर पूजते हैं और वह धूर्त उन अन्ध भक्तों की इज्जत और धन आराम से लूटता रहता है।

संसार में जितने भी मत-मतान्तर चल रहे हैं। अन्ध विश्वास तो उन सभी में पूरा है, परन्तु हिन्दुओं में यह सबसे अधिक है। हिन्दू, मुसंलमान, सिक्ख, ईसाई आदि जो मतवादी हैं ये सभी अपने रास्ते से भटके हुए हैं, क्योंकि वेद के मार्ग से अलग चलना भटकना ही है चाहे वह अपने मजहब की मान्यताओं का कितना भी पालन करता हो वह फिर भी पशु समान ही है। और वेद के बताये मार्ग पर चले बिना मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकता। मुसलमान और ईसाइयों की जो मान्यताएं है, वे उनके अपने लिये तो लाभदायक हैं। और दूसरों के लिये अत्यन्त खतरनाक और हानिकारक हैं। हिन्दुओं की मान्यताएं इनके अपने लिये अत्यन्त खतरनाक और हानिकारक हैं। और दूसरों के लिये लाभदायक हैं। हिन्दू अन्ध विश्वास के कारण मुसलमानों से खूब लुटता है, करोड़ो मुसलमानों की जीविका हिन्दुओं के अन्ध-विश्वास पर आधारित है। और मुसलमान हिन्दू के लूटने में कभी नहीं आ

सकता। यदि मुसलमान के आठ साल के बच्चे को एक हजार रु० दिखाकर यह कहो कि एक हजार रु० दूंगा। तू शिव जी पर एक गिलास पानी चढ़ा दे वह बच्चा झट से उत्तर देगा कि यह तो कुफ्र है शिवजी पर जल चढ़ाने से मैं काफिर हो जाऊंगा और जन्नत से हाथ धो बैठूंगा। इसके विपरीत हिन्दू का यह हाल है कि बच्चों की तो बात ही छोड़ दो अस्सी साल के वूढ़े से भी जहां चाहो वहीं नाक रगड़वा लो। मुसलमान हिन्दुओं की मूर्खता का खूब लाभ उठा रहा है,हिन्दू लुट रहा है,और लुटने में भी अपनी बुद्धिमानी समझ रहा है। इतिहास साक्षी है कि अपनी मूर्खता के कारण विदेशियों के द्वारा, और अपने ही रहनुमाओ के द्वारा जितना हिन्दु लुटा है इतना संसार में दूसरा कोई नहीं लुटा, धर्म और भगवान के नाम पर हजारों वर्षो से लुट रहा हैऔर अब और भी लूट के नये-नये तरीके निकाले जा रहे हैं। वैसे तो हिन्दू अनेक प्रकार से लुटता है परन्तु उनमें लूट के पांच तरीके मुख्य हैं-

१ः मूर्ति पूजा २,कबर पूजा ३,कावंर लाना ४, बाजा बजवाना ५,जादू-टोना ये पांच तरीके हैं जिनके द्वारा मुसलमान हिन्दुओं को लूटते हैं। इन पांचो पर विचार करते हैं।

१ः मूर्ति पूजा

हजारों वर्षो से हिन्दू मूर्ति पूजा के माध्यम से लुटता चला आ रहा है। जितने भी देवी-देवताओं की मूर्तियां पत्थर या मिट्टी की बनाई जाती हैं, भारत वर्ष में इन सबके बनाने वाले अधिकांश मुसलमान हैं, जयपुर, हरिद्वार, अयोध्या, दिल्ली आदि नगरों में हमने देखा तो पता चला कि कुल मूर्तिकारों में 85प्रतिशत मुसलमान हैं। यह सब जानते हैं कि मुसलमान मूर्ति-पूजा का

कट्टर विरोधी है, परन्तु मूर्ति बनाता भी वही है। जब हिन्दु-मुस्लिम दंगे होते है। तो मुसलमान ही मूर्तियों को तोड़ते हैं जिससे उन्हें कई लाभ होते है। पहला लाभ तो यह है कि मूर्ति को तोड़ कर वह प्रसन्न होता है कि मैंने खुदा और कुरान की आज्ञा का पालन किया इससे खुदा मुझे जन्नत प्रदान करेगा। दूसरा लाभ यह है कि मूर्तियों के तोड़े जाने से जो हिन्दुओं को पीड़ा होती है वह हिन्दुओं की पीड़ा मुसलमालों के लिये सुखदायक होती है,हिन्दुओं के दुःख में वे सुख अनुभव करते है। और तीसरा लाभ यह है कि मूर्तियों के टूटने पर हिन्दुओं को नई मूर्ति खंरीदनी पड़ती है। जिससे मुसलमानों की विक्री होती है। जो बनाते है वही तोड़ते हैं और हिन्दू उन्हीं से फिर खरीदता है। मुसलमान हिन्दू की अन्ध-श्रद्धा से परिचित है इसलिये वह मुँह मांगी कीमत वसूल करता है। एक मुसलमान छेनी-हथोड़ा लेकर सवेरे से शाम तक कई भगवान वना देता है एक दश रु० के पत्थर को काट-छांटकर हजार रु० का वना देता है। वे लोग तो चाहते हैं कि हिन्दू मूर्ति पूजक बना रहे जिससे हमारे स्वार्थ पूरे होते रहें।

छः दिसम्बर 1992 को अयोध्या में बाबरी मस्जिद का ढांचा गिराया गया था। तब मैं वहाँ जा रहा था परन्तु रास्ते में ही गिरफ्तार कर लिया। इसके दो वर्ष बाद मैं उस क्षेत्र के एक गाँव में वेद प्रचार के लिये गया। तो एक दिन अयोध्या में घूमने चला गया। वहां मैं पैदल घूमते हुए उसी बाजार में चला गया जहाँ मूर्तियां बनती और विकतीं हैं। एक दुकान बहुत बड़ी और अच्छी सजी हुई थी। नाना प्रकार के देवी देवता रखे थे, दुकान के सामने खड़ा होकर मैं देखने लगा तो उस दुकानदार मुल्ला ने सोचा कि

यह कोई ग्राहक है। वह बोला आओ महाराज जी बैंठो और अच्छी तरह तसल्ली से देखो,जो आपको अच्छी लगे उसे लेलेना। मैं दुकान के अन्दर चला गया और बड़े ध्यान से देखने लगा। वहाँ लगभग दस प्रकार के गणेश रखे थे, इसी प्रकार अन्य देवी-देवताओं की मूर्तियां रखी थी। मैंने पूछा कि मुल्ला जी यह गणेश जी कितने के हैं? वह बोला कि महाराज जी पच्चीस रुपये से लेकर एक लाख तक के गणेश हैं। मुझे लेना तो था नहीं , उसे कुछ समय तक बातों में लगाये रखा। फिर उससे कहा कि मुल्ला जी यह कारोबार आप कितने दिनों से कर रहे हैं? वह बोला कि हमें याद नहीं कई पीढ़ियों से यही काम कर रहे हैं। और हमसे ज्यादा कोई अच्छा कारीगर नहीं है। मैंने कहा कि यहाँ मन्दिर-मस्जिद का झगड़ा चल रहा है, यदि इस देश के मुस्लिम परस्त नेताओं ने यहाँ मस्जिद बनवादी तो फिर आपका यह धन्धा तो चौपट हो जायेगा फिर तुम क्या करोगे? क्योंकि यहां फिर कोई मूर्ति का ग्राहक आयेगा ही नहीं और मुल्ला मौलवी भी यहां यह काम नहीं होने देगें । वह बोला कि फिर भी देखा जायेगा। जिस मालिक ने जान पैदा की है वह खाने को भी देगा। मैंने कहा यह तो ठीक है परन्तु आप यह बताओं कि आप यहां मन्दिर बनना चाहते हो या मस्जिद ? वह बोला कि कुछ समझ में नहीं आता जो ईमान को देखते हैं तो सोचता हूँ कि मस्जिद बने। और पेट की तरफ देखता हूँ तो सोचता हूं कि मन्दिर बने ।

मैंने कहा कि दोनों में से अधिक किसको चाहते हो यह और बतादे? उसने कहा महाराज यदि सच पूछो तो मैं तो मन्दिर ही बनना चाहता हूँ। क्योंकि अब यहाँ मस्जिद नहीं हैं तो अभी

ईमान का क्या बिगड़ गया? नमाज पढ़ने को तो और भी बहुत जगह है। अगर यहाँ मस्जिद बन गई तो रोजगार खत्म हो जायेगा। रोजगार खत्म होने से भूखें मरेंगे । और हिन्दुओं में एक कहावत है कि - **भूखे भजन न होय गोपाला, यह लो अपनी कण्ठी माला ।** भूख में नमाज पढ़ने को खड़ा भी नहीं हुआ जायेगा । जैसे खाली बोरी भी खड़ी नहीं होती जब उसमें अनाज भर जाता है तभी खड़ी होती है। इसलिये रोजगार आवश्यक है। और रोजगार मन्दिर बनने पर ही रह सकता है।

मैंने कहा कि मुल्ला जी यदि हन्दिुओं को परमात्मा कुछ बुद्धि दे दे और ये मूर्ति - पूजा छोड़ दे या आर्य समाज का प्रचार इतना हो जाये कि हिन्दू मूर्ति-पूजा छोड़ दे तो आपका रोजगार तो फिर भी ठप हो जायेगा। वह बोला कि यह तो कभी हो ही नहीं सकता कि हिन्दू मूर्ति-पूजा को छोड़ दे। मेरा विश्वास तो यह है कि मूर्ति-पूजा बन्द नहीं होगी ,और मैं तो अल्ला से रोजाना प्रार्थना करता हूँ कि हे अल्लाह हिन्दुओं को ऐसा ही मूर्ख बनाये रख यदि हिन्दू मूर्ति - पूजा करता रहेगा तो मुसलमान भूखा नहीं मरेगा। उसकी बात सुनकर मुझें दुःख भी हुआ , और उसके सोचने के तरीके पर आश्चर्य भी हुआ और हंसी भी आयी।

हिन्दुओं की मूर्ति-पूजा से मुसलमानों ने कितना लाभ उठाया,उसका वर्णन इतिहास के आधार पर किया जाये तो एक बहुत बड़ी पुस्तक तैयार हो जाये। जिस समय सोमनाथ का मन्दिर लुटा तो मूर्तियों के अन्दर ही भरा हुआ इतना सोना, चांदी हीरे, मोती आदि माल मिला था कि कई सौ ऊंटों पर लदकर गया था। उस समय मन्दिर का पुजारी राजाओं को जो आदेश देता था वह

आदेश राजा को मानना अनिवार्य था, उनके आदेश पर अपार सम्पन्ति राजाओं द्वारा मन्दिरों में दान दी जाती थी। राजा अपनी सुन्दर कन्याओं को देवदासी के रूप में पुजारिओं को दे देते थे। वे कन्याएं देवताओं को प्रसन्न करने के लिये पत्थर के देवताओं के सामने नचायी जाती थी। पत्थर के देवता को तो इससे कोई सुख मिलने का प्रश्न ही नहीं। इस बहाने से वे बदमास पुजारी खूब मौज लेते थे। और मुसलमानों को सम्पत्ति और सुन्दर कन्याएं मन्दिर में इकट्ठी ही मिल जाती थी। कुछ समय के लिये मूर्ति पूजा का प्रचलन मुस्लिम और ईसाई देशों में भी रहा है। इस्लाम के इत्तिहास और बाइबिल पढ़ने से यह पता चलता है कि वहां मूर्ति पूजा होती थी। परन्तु वहाँ शीघ्र ही बन्द भी हो गयी, भारत वर्ष से यह रोग समाप्त होने में नहीं आ रहा।

मुसलमान लोग मक्का में जहां हज करने जाते हैं, वहां कभी एक विशाल शिव मन्दिर था जिसमें तीन सौ साठ मूर्त्तियां रखी थी उनकी सब लोग वहाँ पूजा करते थे। अजर नाम का एक व्यक्ति था, जो मूत्ति बनाता और बेचता था,तथा उस मन्दिर का चढ़ाबा लेता था और उसकी देख भाल भी करता था। अजर का बेटा था। इब्राहीम। इब्राहीम ने अपने पिता का विरोध किया और पत्थर के देवी देवताओं कि सौदागरी करने से रोकना चाहा। परन्तु अजर ने उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। एक दिन पास के एक गाव में मेला लगा था सारा गांव मेले में गया, अजर ने अपने पुत्र इब्राहीम से कहा चलो हम सब भी मेले में चलते हैं इब्राहीम ने कहा कि मेरा स्वाथ्य अच्छा नहीं है आप जाओं मैं घर पर ही रहूगां। अजर अपने दूसरे बच्चों को लेकर मेले में चला गया। बाद

में जब इब्राहीम ने देखा कि सारा गांव मेले में गया तो वह घर से चला और एक कुल्हाड़ी लेकर मन्दिर में गया, वहां जाकर सब से बड़ी मूर्त्ति को छोड़कर शेष सब को तोड डाला सब से बड़ी मूर्त्ति के कन्धे पर उस कुल्हाड़ी को रख कर अपने घर आकर सो गया। जब गाँव के लोग मेले से वापस आये और शाम को मन्दिर में गये तो देखा कि सब मूर्त्तियों के सिर टूटे पड़े हैं। गाँव में शोर हुआ तो सब ने अजर को घेर लिया और कहाँ कि मन्दिर का पुजारी तू है तू चढ़ावा खाता है इसकी रक्षा करना तेरी जिम्मेदारी है। अब तू ही बता कि यह क्या हुआ? मन्दिर को देखकर अजर भी सोच में पड़ गया। उसने सोचा कि इन को तोड़ने वाला तेरा पुत्र इब्राहीम ही हो सकता है। क्योंकि तेरा विरोधी वही है। अजर ने चुपचाप जाकर उससे पूछा कि यह काम तूने किया है क्या? इब्राहीम ने कहा कि मैंने नहीं तोड़ी परन्तु तोड़ने वालों को मैं बता सकता हूं।

अजर ने कहां कि चल तू मुझे बता यह काम किसने किया है? इब्राहीम अपने पिता को लेंकर मन्दिर पर गया और इधर-उधर को देख कर कहा कि पिता जी देखो वह जो बड़े वाली मूर्ति है उसके कन्धेपर कुल्हाड़ी रखी है उसने इन सबको तोड़ा है।

इब्राहीम की बात को सुनकर वहां उपस्थित सैंकड़ो स्त्री-पुरुष एक साथ बोल उठे कि हमें पागल बनाता है यह पत्थर की मूर्त्ति है यह तो चल-फिर ही नहीं सकती, यह खाती-पीती नहीं है,अपनी कोई बात कहती नहीं है और हमारी सुनती नहीं है, बता यह कैसे तोड़ सकती है? इन सब की बात सुनकर इब्राहीम ने कहा कि यह जब कुछ करती ही नहीं,आपकी बात सुनती नहीं और अपनी कुछ

कहती नहीं, खाती-पीती नहीं तो इस पर मिठाई क्यों चढ़ाते हो? जब यह आपकी बात सुनती नहीं तो इनसे प्रार्थना क्यों करते हो? जब यह अपनी रक्षा नहीं कर सकती तो तुम्हारी रक्षा कैसे कर सकती है?। इब्राहीम की बातं सुनते ही लोगों ने कहा कि इसी ने मूर्त्तियों को तोड़ा है, इसे मारो। जब आदमी मारने को दौड़े तो अजर ने किसी प्रकार बचा लिया और घर से बाहर भेज दिया।

इब्राहीम के बहुत दिनों बाद पांच सौ उनहत्तर में मुहम्मद साहब का जन्म हुआ और छः सौ बारह में उन्हों ने मूर्त्ति-पूजा को समाप्त कर दिया। परमात्मा करे कि भारत वर्ष से भी यह रोग शीघ्र ही समाप्त हो, और हिन्दू लुटने से बचे तथा एक निराकार ईश्वर की उपासना करके मानव जीवन के मुख्य उद्‌देश्य अर्थात् मुक्ति प्राप्त करे, और भारत फिर से संसार का मार्ग-दर्शक बने।

२-कब्र पूजा-

देश में जितने भी मजार हैं इनमें एक भी मजार ऐसा नहीं है जो किसी देश भक्त, ईश्वर भक्त, योगी, लेखक, या समाज सेवक का हो। ये मजारें उन लोगों की हैं जिन्होने मुगल काल में युद्ध में या धोखे से हिन्दुओं को काटा है। जो मजार सन्त या फकीरो की बताई जाती हैं वे भी सन्त के वेश में मुगलों के जासूस होते थे। वे सन्त बनकर हिन्दू मंदिरों में जाते थे वहां जासूसी करके सारी गुप्त सूचनाएं मुंसलमान बादशाहों को भेज देते थे वे हमलावरों से भी ज्यादा खतरनाक होते थे। उन पापियों की मजारों पर हिन्दू दस-दस हजार की चादर चढ़ाते हैं। हर वृहस्पतिवार को मजारों पर मेला सा लगता है लाखों का चढ़ावा एक-एक मजार पर चढ़ता हैं। हिन्दू जो चढ़ावा चढ़ाते हैं उसी धन से हिन्दूओं को

मारने के लिये हथियार खरीदे जाते है मैंने अनेक बार मजारों पर जाकर देखा हैं वहां जितने स्त्री-पुरूष जाते हैं वे सब हिन्दू ही जाते है। जिनके मजार हैं वे नहीं पूजते। हिन्दुओं के तेतीस करोड़ देवता कहे जाते है। परन्तु हिन्दू का पेट नहीं भरा तेंतीस करोड़ भी जब कम पड़ गये तब मुसलमानों की मजारों पर जाते हैं। जिन्दा मुसलमान तो हिन्दुओं को खाने को तैयार वैठा है, और मरे हुओं से हिन्दू मनोकामना पूरी करा रहा है। यह हिन्दू कौम भी दुनिया का एक महान आश्चर्य है।

एक बार मैं एक मजार पर इसलिये गया कि यहां देखूं इनमें हिन्दू कितने और मुसलमान कितने है। खूब ध्यान से देखने पर भी वहां एक भी मुसलमान या मुसलमानी दिखायी नहीं दी। मैंने देखा कि उस मजार के चबूतरे पर एक शेर लिखा हुआ था,शेर यह था -

बिस्तर की सलबटों से महसूस हो रहा है तोड़ा है दम किसी ने करवट बदल-बदल कर।
हालांकि दूर नहीं था घर से तुरबत का रास्ता फिर भी मेरा जनाजा पहुंचा कन्धा बदल-बदल कर।।

इस शेर का मजार से तो कोई संम्बन्ध नहीं है परन्तु लिखने वाले ने पता नहीं क्यों लिखा। मुझे एक शेर याद आ गया जो किसी मुंसलमान कवि का लिखा हुआ है। मैंने सोचा कि यदि मैं इस शेर को यहां लिख दूं तो हो सकता है कि कोई समझदार व्यक्ति इस से कुछ शिक्षा ले ले और अपने जीवन का सुधार कर ले। मजार की पूजा छोड़कर यहां लुटने से बच जाये। अब समस्या यह थी कि लिखने के लिये मेरे पास कुछ था नहीं। मैंने इधर-इधर देखा तो वहां एक चूल्हा

बना हुआ था जिसमें वह मुल्ला अपना भोजन बनाता था, उसमें लकड़ी के कोयले पड़े हुए थे। मैने एक कोयला उठाया और मजार पर वह शेर लिख दिया। मजार कह रहा है-

मैं सो रहा था चैन से ओढ़े कफन मजार में मेरे उजड़े मजार पर किसने दिया जला दिया।

मैं आराम कर रहा था दुनिया से दूर होकर यहां भी सताने आगये इन हिन्दुओं को किसने पता दिया।

भारत वर्ष में हजारों मजार ऐसे हैं जिनमें वो पापी दबे पड़े हैं जिन्होंने इस देश कि हजारों स्त्रियों से बलात्कार किया,हजारों गायों की हत्या की, इस देश के हजारों मन्दिरों को तोड़ा, हजारों गांवों को लूटा और जलाया,और मुसलमानों का गुलाम बनाने के लिये देश में नाना प्रकार के षड़यंत्र रचे। हिन्दू उन्हीं को पूजता है। महाराष्ट्र में सन् २००५ में एक महीने तक वेद प्रचार किया,महाराष्ट्र के कई जिलों में घूमने का अवसर मिला। कई बार देहात में बड़े अजनबी से इलाके से जाना हुआ एक गांव में देखा कि सड़क के किनारे एक मजार बना हुआ है,बृहस्पतिवार का दिन था,उस मजार पर दिन के आठ बजते ही स्त्रियों का आना शुरू हो गया, और देखते-देखते थोड़ी देर में हि वहाँ भीड़ लग गयी। उसका चढ़ावा लेने वाले कोई मुसलमान नहीं था, साधु वेश में एक हिन्दू था। इस मजार से लगभग पचास गज की दूरी पर एक प्राइमरी पाठशाला में हम ठहरे हुए थे, और कार्यक्रम भी पाठशाला में ही होता था। दोपहर का कार्यक्रम आरम्भ होने से पूर्व दो सज्जन मेरें पास आये,दोनो वृद्ध थे, वे बोले कि स्वामी जी जब इस मजार पर हिन्दू जाते हैं तो मुझे बहुत पीड़ा होती है। मैं इन को बहुत समझाता हूं

परन्तु ये मानते नहीं। आज आप कृपा करके इन्हें समझा दें तो शायद इनकी कुछ समझ में आ जाये। और यह मजार किस का है यह मैं आपको बता देता हूं। मुझे भी जानने की इच्छा हुई, मै सुनने लगा, उस वृद्ध महाशय ने बताया कि स्वामी जी ओरंगजेब के समय में अलीशाह नाम का एक मुसलमान था, वह बहुत अत्याचारी था हिन्दू उसके सामने विवश थे, वह गांव-गांव में घूमता रहता था और गांव में जो सुन्दर लड़की दिखाई देती थी उसे ही अपनी वासना का शिकार बनाता था। जिस सेठ साहूकार से जो धन मांगता था वह सेठ को देना ही होता था। लगभग बीस गांवो के इस क्षेत्र में जब किसी युवक का विवाह होता था, घर में नई दुल्हन आती थी तो वह दुल्हन अपने पति के दर्शन करने से पहले एक रात अलीशाह के साथ बिताती थी। जो ऐसा करने से अर्थात् दुल्हन को उसके पास भेजने से मना करता था तो उस पूरे परिवार को समाप्त कर दिया जाता था। कई वर्षों तक यह अनाचार होता रहा, लोग अत्यन्त दुखी थे, परन्तु उसे मारने की हिम्मत कोई न कर सका। तभी परम-पिता परमात्मा ने एक युवक को प्रेरणा दी और उस युवक ने उस पापी का नामो-निशान मिटा दिया। ऐसा हुआ कि हमारे इस गांव में एक युवक जोरावर सिंह का विवाह हुआ तो अलीशाह के गुप्तचरों ने उसे सूचित कर दिया, उसने तुरन्त खवर दी कि जोरावर सिंह अपनी पत्नी को हमारे पास भेज दो। जोरावर सिंह को तो पहले ही यह पता था कि तेरे साथ भी वहीं होना है जो अन्यों के साथ होता रहा है। परन्तु जोरावर सिंह ने निश्चय कर लिया कि मैं अपने प्राण दे सकता हूँ, पर पत्नी को वहा ही भेजूंगा। उस वृद्ध ने बताया कि जोरावर सिंह एक धनी

परिवार में पैदा हुआ था समाज में उसकी प्रतिष्ठा भी थीं। उसके आचार-विचार को देख कर लोग यह आशा भी रखते थे कि शायद जोरावर सिंह ही उस पापी का संहार करे और लोगों की आशा को जोरावर ने पूरा कर ही दिया।

जोरावर ने तुरन्त अलीशाह को सूचना देदी कि मेरी पत्नी अपनी एक दासी को लेकर आज रात को आपके पास आ जायेंगी। इस के बाद जोरावर ने अपने परम मित्र उदयसिंह से बातचीत की। जोरावर के प्रस्ताव को सुनकर उदयसिंह ने कहा कि मैं स्त्री का वेश बना लेता हूँ और आप भी ऐसा ही करे। रात में चलेगें जिस समय वह हमारे पास आयेगा उसी समय तलवार के हाथ दिखायेंगे। दोनों ने अपने मन चाहे हथियार ले लिये, सजधज कर गाड़ी में बैठकर चल दिये और रात के समय जब गाड़ी जाकर रुकी तो शराब के नशे में धुत्त वह पापी बकता हुआ गाड़ी के पास आया तो उसके परिवार वाले भी वहां आगये उस समस्त ग्राम में केवल दो घर हिन्दुओं के थे शेष मुसलमान थे। उन सब को यह आशा विल्कुल भी नहीं थी कि यहाँ कुछ और भी हो सकता है वहां पचास के लगभग स्त्री पुरुष इकट्ठे थे। गाड़ी के एक ओर स्त्री और एक ओर पुरुष थे। अलीशाह नशे में तो था ही उसनें सब के सामने अश्लील हरकत करने के विचार से स्त्री वेश मे बैठे उदय सिंह का हाथ पकड़ कर खींचना चाहा तो तभी उदय सिंह वीर ने अपनी तलवार से उसकी गर्दन पर वार किया और गर्दन कटकर दूर जा गिरी। फिर क्या था जोरावर तलवार लेकर टूटपड़ा वहां उपस्थित सभी लोंगों को काट डाला फिर घर में घुस कर अलीशाह की बूढ़ी मां को मारा। और उसके दो वच्चों को यह

कहते हुए मार डाला कि सांप का वच्चा भी सांप ही होता हैं। दोनों वीर अपना काम करके वापस आगये किसी की हिम्मत नहीं हुई कि उनका पीछा करे। मुसलमानों ने उसे शहीद की उपाधि दी और उसकी यहाँ मजार बना दी। हिन्दू कुछ दिन बाद हि जोरावर व उदयसिंह को तो भुल गये और पापी अलीशाह की पूजा करने लगे। और उसने यह भी बताया कि उसकी पूजा केवल अब पन्द्रह वर्षो से शुरू हुई है। यह कहानी सुनकर कष्ट तो मुझे होना ही था, परन्तु कार्य क्रम का समय हो चुका था। पांच वजे तक कार्य क्रम चला तो मेने इसी विषय पर बोलना शुरू कर दिया। और जब अत्यन्त कटु शब्दों का प्रयोग किया तो स्त्रियां खड़ी होकर सुनने लगी। उन्हों ने पूरा व्याख्यान सुना परन्तु कोई बोली नहीं। मेने बार-बार कहा कि पूछो कुछ पूछना होतो। परन्तु सब चुप रहीं। शाम को मैं ने उस साधु वेश धारी धूर्त्त के पास जाकर खूब कहां। उस समय उसने अपनी गलती को माना भी। अगले दिन हम वहां से आगये। अगले बृहस्पतिवार को भी हम उस क्षेत्र में ही थे। मैं ने उस वृद्ध से फोन करके पूछा तो उन्होंने बताया कि इस बार केवल सात स्त्रियां आयी थीं उनको हमने बहुत वुरी तरह से लताड़ा है हो सकता है कि अगली वार से ये भी न आयें। उस वृद्ध व्यक्ति के पिता जी ने महर्षि दयानन्द के दर्शन किये थे तभी से वह परिवार आर्य समाज के प्रति समर्पित थें वैदिक सिद्धान्तं के विवरीत किसी भी कार्य को देखकर उन्हें अत्यन्त कष्ट होता था।

सन् २००० ई में काठमांडू से दिल्ली आने वाले विमान का अपहरण आतंक वादियों ने कर लिया और वे विमान को कंधार ले गये। वहाँ जाकर उन्होंने भारत सरकार को चुनौति दे दी कि भारत

वर्ष की जेलो में हमारे ३७(सैंतीस) आतंकवादी बंद है आप उन्हें तुरन्त छोड़ दे वरना विमान को जला देंगे, और इस में सवार सभी यात्रियों को जलाकर भस्म कर देंगे। भारत सरकार ने उनकी शर्त को स्वीकार किया और सभी आतंक-वादियों को जेल से निकाल कर अपने विमान में वैठा कर बड़े सम्मान के साथ भारत के विदेश मंत्री और कुछ पत्रकार बन्धु उन्हें छोड़ ने गये। और उन्हें बहुत मोटी रकम भी दी।

अफगानिस्तान जाकर पत्रकारों ने विमान के यात्रियों से मुलाकात की। वहां के कुछ पत्रकार भी वहां आये, दोनो देशें के पत्रकारों की भेंट हुई तो भारत वालों ने कहा कि इस विमान अपहरण की घटना के बहाने से आप के देश में हमारा आना हुआ है पता हीं फिर आना हो या नहीं। आप अपने देश की कोई खास चीज हमें दिखायें जिसकी चर्चा हम अपने देश में जाकर करें अफगानिस्तान के पत्रकार उन्हें अपने साथ ले गये। यह एक सड़क के किनारे पर एक कब्र बनी है, उस कब्र पर एक जूता रखा हुआ है। भारतीय पत्रकारों ने कहा कि इस कब्र पर जूता क्यों रखा हैं? तो उन्होंने कहा कि यही तो है आपके देखने योग्य चीज। उन भारतीयों ने आश्चर्य से पूछा कि यह क्या मामला है हमें बतायें। उन्हों कहा कि बस दो मिनट रूको । तभी एक कार आकर कब्र के पास रुकी और उस मैं से चार आदमी निकल कर कब्र पर गये और सब ने पांच-पांच जूते कब्र पर लगाये। भारतीयों ने पूछा कि यह क्यों होता हैं? उन्होंने कहा कि अभी और देखो। तभी एक कार आकर रुकी और उसमें सवार सभी लोगों ने जूते लगाये। वह कब्र सड़क के किनारे थी आते-जाते लोग उसमें जूते मारना भी

पुण्य का कार्य मानतें हैं।

भारतीयों ने पूछा कि अब आपको बताना ही पड़ेगा। यह कब्र किस की है? और इसे जूते क्यों मारे जाते हैं? इस का उत्तर देते हुयें उन्हों ने कहा कि कब्र तुम्हारें पृथ्वीराज चौहान की है। और इसने हमारे बादशाह गोरी को बहका कर अपने तीर से मार डाला था। उसी का बदला लेने के लिये यह सब किया जाता हैं।

पाठकों को ज्ञात होगा कि पृथ्वीराज ने मोहम्मद गोरी को सत्रह बार क्षमा कर दिया था अन्तिम बार जयचन्द्र की गद्दारी के कारण पृथ्वीराज की हार हुई। और पृथ्वीराज को बन्दी बनाकर अफगानिस्तान ले गया। वहाँ जाकर उसने पृथ्वीराज की आखें फोड़ दीं और अंधेरी कोठरी में तड़प-तड़प कर मरनें के लिये छोड़ दिया। तभी एक प्रसिद्धि कवि जो पृथ्वीराज का दरबारी कवि था, वह वहां गया और गोरी को कहां कि पृथ्वीराज चौहान शब्द भेदी बाण चलाना जानता है आप इस के प्राण त्यागने से पहले यह पृथ्वीराज का चमत्कार देख लें तो अच्छा होगा। चन्द्र वरदाई कवि के अनुसर सारी तैयारी कर दी गयी। और लोहे का तवा ऊपर रख कर गोरी को कहा गया कि तुम इसमें एक पत्थर का टुकड़ा उठाकर मारना,आपका पत्थर इस तवे में जहां लगेगा उसकी आवाज को सुनकर ठीक उसी जगह पर पृथ्वीराज का तीर लगेगा। समय पर कवि ने पृथ्वीराज को संकेत कर दिया कि --

चार बास चौबीस गज अंगुल अष्ट प्रमाण।
ता ऊपर सुल्तान है मत चूके चौहान।।

पृथ्वीराज का तीर अपने निशाने पर जाकर लगा। अर्थात् गोरी के सीने को छेदकर पार निकल गया। इस प्रकार पृथ्वीराज ने उसे

गद्दारी का मजा चखाया। कुछ लोग कहते हैं कि यह घटना काल्पनिक है। चलो हम यह मान लेते हैं कि भारत के लोगों ने कल्पना कर ली होगी। परन्तु अफगानिस्तान वालों ने भी कल्पना कर ली क्या? वहां की कब्र वाली घटना से साफ हो जाता है कि वहां यह घटना अवश्य हुई है। यह घटना वहां से आकर पत्रकारों ने २० जून सन् २००० के दैनिक जागरण में छापी है।

अब आप लोग हिन्दू की गिरावट का अनुमान लगा सकते हैं कि यह कितना गिर चुका है एक तरफ तो कब्र बनाकर जूतें मारते हैं। और हिन्दू कब्रों पर फूल चढ़ाता है। अब हर हिन्दू को सावधान हो जाना चाहिये और हर प्रकार की जड़-पूजा को छोड़ कर केवल एक परब्रह्म परमेश्वर की उपासना करनी चाहिये। परमेश्वर के साथ किसी को सम्मलित नहीं करना चाहियें क्योंकि उसके समान और कोई नहीं है। जो ईश्वर के नाम पर पत्थर पूजते हैं वे जन अधोगति को प्राप्त होते हैं और अनेक जंन्मों तक मानव योनि प्राप्त करने का अवसर नहीं मिलता।

सच्चाई यह है कि मुसलमान अपने जीवन में अनेक गायों को मौत के घाट उतारनें, हिन्दू वहनों की लाज लूटने तथा भारत को मुस्लिम राज्य बनाने के लिये नीच से नीच षड़यंत्र रचता रहा हो,वह मरने के बाद हिन्दुओं को क्यों चाहेगा? कवर में दवाने के बाद जिसमें मांस और हड्डियो को भी कीड़े खाकर मिट्टी बना चुके हों आत्मा कभी का जा चुकाहो, वह सड़ी हुई मिट्टी इन हिन्दुओं का कौन सा काम सुधार देगी?

खोज करने से वह बात भी सामने आयी है कि इन मजारों में बहुत सी मजार तो कुत्ते-विल्ली की हैं। जिसको उस समय

अमीर मुसलमानों ने उपने शोक के लिये पाल रखी थी।

प्रिय पाठक वृन्द। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि सड़को के किनारे वनी हुई ये मजारें कोई साधारण बात नहीं है। इनके पीछे भी एक योजना काम कर रही है। धीरे-२ इनकी संख्या वढ़ती जा रही है,और अब ये देश के मुख्य-मुख्य राजमार्गो पर दिखायी देने लगी हैं।

वास्तव में होता यह है कि कहीं सड़क आदि के किनारे पहले तो आपको एक कच्ची कबर दिखायी देगी, फिर कुछ दिनों बाद उसका पक्का चबूतरा दिखाई देगा, और उसके पास एक मटका रखा दिखाई देगा। धीरे-धीरे वहां दाढ़ी वाला एक झोंपडी बनाकर बैठा मिलेगा और फिर वहां एक मस्जिद दिखाई देगी। वह मुल्ला आने-जाने वाले लोगों को पास बैठाकर झूठी कहानियां सुनायेगा। जैसे-पीरबाबा ने एक बांझ स्त्री को पुत्र दिया, पीरवावा ने एक आदमी की दस साल पुरानी वीमारी ठीक कर दी ,एक की मुकदमे में जीत होगयी, एक आदमी के बेटे की नौकरी पीरबाबा की कृपा से लग गयी, एक युवक का विवाह पीरबाबा की कृपा से हो गया। इन बातों को सुनकर वहुत से मूर्ख और स्वार्थी इनके जाल में फंस जाते हैं। यहां तक अफवाहें उड़ायी जाती है कि जो किसान अपनी खेती की पहली उपज पीरवावा को चढ़ायेगा तो पीरबाबा उसे हजारों गुणा करके वापस कर देंगे। कई जगहों पर देखा जाता है कि बहुत से किसान अपनी फसल में से चावल, गेहूँ आदि कब्र पर चढाते हैं। जो नई भैंस खरीदकर लाता है तो उसका दूध पहले मजार पर चढाता है बाद में आप पीते हैं।

सच्चाई यह है कि इन मजारों की तेजी से वृद्धि होने का

मुख्य उद्देश्य वैदिक संस्कृति तथा भारत की स्वतन्त्रता को बरबाद करना है, और उसके स्थान पर गौमांस भक्षी और बहु विवाह की संस्कृति को पनपाकर भारत में कुरान के अनुसार मुसलमानी राज्य की स्थापना करना है।

भोले भाइयो!इतिहास को दोहराने से रोको। देखों! ये कवरें इसलिये बनाई जा रही हैं कि जब भी गौ मांस खाने वाले दरिन्दों के द्वारा देश में लड़ाई भड़काई जाये तो मुहल्लों या मुख्य मार्गों पर बनी हुई ये मजारें उस समय देश के गद्दारों को हथियार सप्लाई करने और गद्दारों को छुपने के काम आयेंगी। हम देखते हैं कि कुछ ही दिनों में मुल्ला की झोंपड़ी की जगह एक आलीशान भवन बन जाता है। और एक भिखारी मुल्ला करोडपति बन जाता है। अपने मजार व कवर पूजने वाले भाई वहनों को मैं इतना ही बताना चाहता हूं कि -

सांपों को दूध मत पिलाओ। अपनी कब्र अपने हाथों मत बनाओं, अपने मरने के लिये इन पर चादर चढ़ा कर अपने ही कफन को मत जोड़ो।

किसी कवि ने कहा है-

पिलाना दूध सांपों को अकल मंदी नहीं यारो।
इन्हें छोड़ो इन्हें तोड़ो इन्हे तुम दूर कर डालो।
अगर कुछ जान बाकी है अगर ईमान बाकी है।
न हिम्मत हारना जब तक कोई शैतान बाकी है।।

कितने आश्चर्य की बात है कि एक ओर तो वैदिक संस्कृति, चरित्र,गाय, देश तथा धर्म के हत्यारों की कबरों पर दीपक जलाये जाते हैं। दूसरी ओर संस्कृति के रक्षक राम और कृष्ण का

नाम लेने वाले बिना कपड़े और भोजन के तड़प-२ कर मर जाते हैं। हिन्दू भाइयों और वहनों! अपने सर्वव्यापक, ईश्वर की भक्ति करो। वेद मंत्रो से प्रतिदिन यज्ञ करो, अपने विद्वानों में श्रद्धा रखो तो आपके सब दुःख दूर हो जायेंगे।

३. कांवर की कुप्रथा

यह भी हिन्दुओं की लूट का एक अच्छा उपाय है कांवर वनाने वाले भी सब मुसलमान हैं। कांवर लाने की प्रथा का स्रोत भी कल्पित हैं। हमने कई कांवर लाने वालों से पूछा कि यह जो तराजू सी कन्धे पर लादकर तुम लाते हो इसके लाने का उद्देश्य क्या है और इससे होने वाला लाभ क्या है? अधिकतर ने तो कोई उत्तर ही नहीं दिया। वस इतना कहते हैं कि सब लाते हैं और यह पुण्य का कार्य है इसलिए लाते हैं। एक दो लोगों ने उत्तर दिया, जो पौराणिक जगत् में विद्वान माने जाते हैं, वे कहते है कि कांवर लाने से माता-पिता की सेवा का फल मिलता है। प्राचीन काल में श्रवण कुमार नामक एक युवक ने इसी प्रकार की तराजूसी बनाकर अपने अन्धे माता-पिता को उसमें बैठाकर तीर्थ दर्शन कराये थे। इस सेवा से श्रवण कुमार को स्वर्ग प्राप्त हुआ था। मैंने उनसे कहा कि यह तर्क आपका बिल्कुल धोखा है,यह बात गले से नीचे उतने वाला नहीं हैं। पहली बात तो यह हैं कि कोई कितना भी शक्तिशाली पुरुष हो वह भी दो व्यक्तियों को लेकर इतनी लम्बी यात्रा नहीं कर सकता। दूसरी बात यह है कि उस समय इस तीर्थ यात्रा का प्रचलन भी नहीं था। उस समय किसी तालाब को या स्थान विशेष पर रहने वाले किसी व्यक्ति के मूर्ति के दर्शन को तीर्थ दर्शन नहीं

कहते थें। यह सब पाखण्ड लगभग २५००(ढाई हजार वर्ष) वर्षो से चला है। तीसरी बात यह है कि श्रवण कुमार के माता-पिता तो अन्धे थे, परन्तु तुम्हारे तो अन्धे नहीं है। सावन के महीने में आप अपने माता-पिता को साथ लेकर साधुओं के पास जाया करों और वेद कथा सुना करो। चौथी बात यह है कि श्रवण के माता-पिता अन्धे थे तो अन्धों को दर्शन होता ही नहीं है। फिर वहा लेजाने से क्या लाभ? पांचवी बात यह भी है कि उस जमाने में याता यात के साधन नहीं होगे, परन्तु आज कल तो बहुत से साधन हैं। अब यह नाटक क्यों करते हो?

हरिद्वार से जल भरकर लाये और शिवलिंग पर डाल दिया। इस से पिता की या माता की कौन सी सेवा हो गयी? क्या वास्तव में भी ये कांवर लानेवाले माता-पिता की सेवा करते है। आंख के अन्धे और गांठ के पूरे धनवान मूर्ख जगह-जहग भन्डारे चला देते है और ये खूब भांग,शराब, और हलवा पूरी खाते-पीते नाचते-गाते चलते आते हैं। कई दिनों तक देश में यातायात बहुत बाधित रहता है।

असली बात है कि इस कांवर के नाटक से माता-पिता की सेबा का कोई सम्बन्ध नहीं है। ये तो मनोंकामनाएं पूर्ण करने जाते हैं। इस हिन्दू जाती के दुश्मन तिलकधारी,पन्डे पुजारी और साधु वेश धारी धूर्त लोग इन मूर्ख हिन्दूओं को बहका देते हैं कि तुम कांवर लाओगे तो आपकी मनोंकामनायें अवश्य पूरी होगी। मूर्ख लोग इन के वहकावे में आजाते हैं, क्यो कि ऐसा आदमी तो कोई नहीं है जिस की कोई मनोकामना न हो। किसी को पुत्र की कामना किसी को विवाह की कामना,

किसी को मुकदमा जीतने की कामना, किसी को अपने शत्रुं पर विजय पाने की कामना तो किसी को धनवान बनने कि कामना। कांवर लाने से ये मनोकामनाएं पूर्ण हो जाये गी, बस इसी लालच में ये सब होता है। हमारे विचार से तो इन के जो काम बनने वाले होते हैं। वे भी बिगड़ जाते हैं क्योंकि आवश्यक कार्यों को छोड़ कर वहां जायेगा तो काम बिगड़ेगे ही।

सन् १९८५ की बात है मेरठ का एक धनवान व्यक्ति था उस के पांच लड़की थी। उस से वह वहुत दुःखी रहता था कि कोई पुत्र नहीं हैं। उसकी पत्नि का इलाज भी चल रहा था। सन् १९८५ में उस कि पत्नि छटी वार गर्भवती थी, एक आयुर्वेदिक वैद्य ने कहा था कि इस बार पूरी आशा है कि आप एक स्वस्थ पुत्र को जन्म देंगी। तभी एक साधु-वेश धारी धूर्त्त भिखारी वह उनके घर आया तो उस स्त्री ने पूछा कि महाराज आप तो अन्तर्यामी हैं कृपा कर के यह बताओं कि इस बार मेरे गर्भ से लड़का होगा या लड़की? उस धूर्त्त ने कहा कि वेसे तो आपके पेट में लड़का ही है, परन्तु इसके जन्म से पहले कोई ग्रह का चक्र चल गया तो इस की लड़की भी होसकती हैं। स्त्री नें कहा कि महाराज कोई ऐसा भी उपाय है जिससे यह लड़का ही बना रहे। कोई ग्रह का चक्र न चले। उस धूर्त्त को मोका मिलगया उसने सोचा कि इसे ठगने का अच्छा अवसर है। धूर्त्त ने कहा कि उपाय तो हो जायेगा यदि आप पांच सौ रु० खर्च करे। स्त्री बोली कि मैं पांच सौ रु० खर्च कर दूंगी बोलो क्या- क्या काम करने हैं? धूर्त ने कहा कि आप को कुछ नही करना, आप केवल पांच सौ रु० मुझे दे दो मैं कुछ घी लाऊंगा,

कुछ कपूर आदि कई चीजे बतादी और पांच सौ रु० लेलिये। फिर कहा कि एक काम आपके पति को करना है, वह यह हैं कि इस बार कांवर अवश्य लाये। धूर्त पांच सौ रु० लेकर चलता है शाम को उसका पति आया तो सब कथा सुनाई और कहा कि इस बार आपको कांवर अवश्य लानी है, पति ने बात मानली। कांवर लाने का समय निकट था। वह कांवर लाया। इस के दो माह पश्चात् स्त्री ने स्वस्थ लड़के को जन्म दिया। वैद्य जी ने पहले ही बता दिया था कि इसबार मेरी औषधि अवश्य ही सफल होगी। पति-पत्नि दोनों वैद्य जी के परिश्रम को तो भूल गये बस साधु वेश धारी धूर्त्त और कांवर ये दोनो ही याद रह गये। उस का पति तो पूर्ण रूप से यही मान बैठा कि यह सब कांवर लाने का ही चमत्कार है। बच्चे के जन्म से दश माह बाद ही अगले वर्ष फिर कांवर लाने का समय आ गया इस बार उसने शिव को प्रसन्न करने के लिये बड़ी धूमधाम से अनेक मित्रों को साथ लेकर कांवर की तैयारी की। अपने आठ-दश मित्रों को लिया और एक ट्रैक्टर के पीछे ट्राली लगाई और ट्राली से जनरेटर लगाया। ट्रैक्टर ट्राली को सजाया गया। ट्राली में एक तख्त विछाया नाचने के लिये माईक आदि कि अच्छी व्यवस्था के साथ भी शराब की बोतले भी ले गये। मेरठ से चले तो उस बच्चे को भी साथ ले लिया कि यह शिव का दिया हुआ हैं। इसे भी शिव के दर्शन कराकर अशीर्वाद दिलाऊँगा। बच्चे के साथ उसकी मां का जाना भी अनिवार्य होगया। मेरठ से हरिद्वार तक नाचते गाते और शराब पीते गये। वहा से कांवर खरीदी और जल ले कर वापस चले तो उसी प्रकार नाचते गाते चले। मुजफ्फरनगर में आकर सबने शराब पी,माइक चलाया और नशे में

धूर्त सब नाचने लगे। कुछ देर नाचने के बाद उस व्यक्ति ने अपनी पत्नि का हाथ पकड़कर खीचा और कहा कि पगली तुझे शिव ने पुत्र दिया है और तू शिव को प्रसन्न करने के लिये पांच मिनट नाच भी नहीं सकती। उसकी भी समझ में पति की बात आ गयी। उसकी गोद में बच्चा सो रहा था, उसने बच्चे को ट्राली में जो पीछे की और तख्त बिछा था उस पर कपड़ा बिछाकर बच्चे को सुला दिया। आप नीचे उतरी और जहां आठ-दश गुन्डे नाच रहे थे उनमें जाकर नाचने लगी। जोर से माईक चल रहे थे, सब ने शराब पी थी, हजारों लोग तमाशा देख रहे थे। कुछ लोग कह रहे थे कि इसे लाज नहीं आती इतने लोगों के बीच नाच रही हैं। कुछ कह रहे थे कि भक्ति ऐसी ही होती है इसमें लाज का क्या काम ? किसी को कोई खबर नहीं सब आनन्द में मस्त थे। तभी ऐसा हुआ कि उस बच्चे ने करवट बदली। और करवट बदलते ही नीचे आ गिरा। नीचे जनरेटर चल रहा था। जनरेटर के पंखे पर जा गिरा। पंखा तेजी से घूम रहा था। बच्चे को छोटे-छोटे टुकडो में काट डाला। पंखे से खून के छींटे और छोटे-छोटे मांस के टुकड़े लोगों पर जाकर गिरे तो सब भौचक्के रह गये। तभी कुछ लोगों ने जनरेटर की और भी देखा तो एक दम चिल्ला उठे। बच्चे की मां का बुरा हाल था उस समय देखा नहीं जा रहा था। बच्चे का पिता बार-बार एक ही वाक्य को बोल रहा था कि हे शिव जी महाराज आपने यह बच्चा क्यों दिया था और क्यों ले लिया? कहता -कहता वे-सुध हो गया। जब जनरेटर को बन्द किया तो बच्चे के सिर का थोड़ा सा हिस्सा एक ओर को उलझा हुआ था बाकी सब विखर चुका था। संसार के सभी प्राणियों में मानव को सब से बुद्धिमान

माना जाता है और है भी। परन्तु सब से अधिक मूर्ख भी यही है। ऐसी-२ अनेक घटनाएं हैं जिनसे महाविनाश हुआ है परन्तु हिन्दू ने विचार त्याग दिया है। हिन्दू को समझाना अत्यन्त कठिन है और इसे बहकाना अत्यन्त सरल हैं धूर्त लोग हजारों वर्षों से इसे लूट रहे है और यह लूटने में ही अपना बड़प्पन मानता है।

जब लोग कांवर लेकर आते हैं तो उनकी जवान पर एक अक्सर एक ही बात रहती है,बोल बम बोल बम। कई लाख लोग चिंघाड़ते रहते हैं परन्तु शिवजी का बम आज तक बोलाही नहीं, जबकि मुसलमानों के बम रोजाना कहीं न कहीं बोलते हीं रहते हैं। पता नहीं शिवजी के बम के अन्दर बारुद है या गोवर भरा हुआ है'अमरनाथ जाने वाले अनेक यात्री आतंकवादियों द्वारा मारे गये,परन्तु शिवजी का बम नही बोला सैंकड़ो कांवरिये भौतिक आपदा से मारे गये परन्तु शिवजी ने कोई रक्षा नहीं की वह तो अपनी ही रक्षा नहीं कर सकता दूसरों की क्या रक्षा करेगा। मुसलमानों द्वारा हजारों शिव मन्दिर तोड़े गये परन्तु शिवजी ने कभी किसी हमलावर की दाढ़ी का एक बाल भी नही उखाड़ा।

सन्१९९२ की बात है जब कांवर चल रही थी तो हरिद्वार से मुजफ्फरनगर तक यातायात बन्द था। रुड़की में कांवरियों की सुरक्षा के लिये सेना तैनात की हुई थी। जिस समय कांवरिये भारी संख्या में बोल बम-बोल बम कहते जा रहे थे,तभी एक मुसलमानी लगभग चालीस वर्ष की आयु वाली बुर्का पहने हुए थी वह सड़क के किनारे आकर खड़ी हो गयी। जब उसे लगभग दस मिनट हो गये तो सेना के अफसर ने सैनिक को कहा कि मैटल-डिटेक्टर लेकर इसकी जांच करो। वह सैनिक आदेशानुसार उसके पास गया

तो मैटल डिट्रेक्टर ने खतरे का संकेत दिया। सैनिक ने कहा कि इसके पास कोई खतरनाक चीज है। अफसर ने स्वयं जाकर पूछा कि यह कपड़े में क्या छुपाया हुआ है? यह वुर्का उतारो, उसका वुर्का उतारा तो देखा कि उसके पास एक छोटा सा मरा हुआ बच्चा था। अफसर ने कहा कि यह क्या है? उसने कहा कि मेरा बच्चा है यह मर गया है इसे दफनाने जा रही हूं। अफसर ने कहा कि बच्चों को दफनाने पुरुष जाते हैं स्त्रियां नहीं जातीं। और तेरा आदमी मर भी गया हो तो तेरे साथ एक दो स्त्री तो होनी चाहिये थी और फिर तू यहां इतनीं देर से क्यों खड़ी है? और इधर कबरिस्तान भी नहीं है फिर दफनाने कहां जा रही है? वह डर गयी और कुछ बोली नहीं। अफसर नें उस बच्चे को लेकर एक तरफ रख दिया और यत्र से फिर जांच की तो वह खामोश था। अफसर नें कहा कि बच्चे पर जो कपड़ा लिपटा है उसे उतारों जो खतरनाक चीज है वह इसी में है। सैनिक ने कफन उतारा तो देखा कि बच्चे का पेट फूला हुआ और पेट में टांके लगे हुए हैं अफसर ने कहा कि पेट को फाड दो। सैनिक ने पेट फाडा तो उसमें से बम निकला। उन्होने पहले तो बम को निष्क्रिय किया, फिर उसे पकड़कर एक तरफ ले गये और बांधकर जब डण्डा बजाया तो बताने लगी। उसने बताया कि मेरे जैसी ६ औरतें और हैं जो रुडकी से मुजफ्फरनगर तक लगी हुई है। कुछ ही देर में फोन आने वाला था फोन आते ही मैं बच्चे को सड़क पर रख देती और दूर हटकर रिमोट दबा देती। बम फटता और सैकड़ो लोगों की जान ले लेता यही मेरा उद्देश्य था। सेना के अफसर ने तुरन्त मुजफ्फरनगर की पुलिस को एक दम चेतावनी दे दी। जब पुलिस

सक्रिय हुई तो पांच औरते और पकड़ी गयी एक भागने में सफल हो गयी थी। विचार कीजिय कि सेना इतना कार्य न करती तो कुछ ही समय में हरिद्वार से मुजफ्फरनगर तक सात बम फटते और हजारों की जान चली जाती। लेकिन इन सब घटनाओं को देखते हुये भी हिन्दू की आखें नही खुलती यह बहुत दुर्भाग्य है।

४- जादू टोना -

इस पाखण्ड़ से भी हिन्दू खूब लुटता है इसमें मुसलमान तो हिन्दू को लूटता ही है परन्तु हिन्दू भी हिन्दू को खूब लूटता है। मुसलमान को किसी भी प्रकार से हिन्दू द्वारा लुटता हुआ नहीं देखा जा सकता। हर मस्जिद में एक-दो मुल्ला अवश्य मिल जायेगा जो,ताबीज बनाता है हिन्दू औरते जाती है और कई-कई सौ रु० में तावींज बनवाती हैं। बहुत सी कहती है कि मुल्ला जी ऐसा तावीज दे दो जिस से मेरे बच्चे पर भूत-प्रेत की छाया न पड़े। कोई कहती हैं मुल्ला जी मेरी भैंस के लिये तावीज दे दो उसे बार-बार किसी की नजर लग जाती है और वह दूध देना बन्द कर देती है। आप ऐसा तावीज तो जिससे कभी उसे नजर न लगे। मुल्ला तावीज देता है और कहता हैं कि इसे बच्चे की बांह में बाध देना, और इसे भैंस की सींग में वाध देना, तावीज लेकर वह पूछती है कि मुल्ला जी इनके कितने पैसे दूं? तो वह तुरन्त कहता है कि वैसे तो इन दोनों के ढाई सौ रु० बनते हैं परन्तु आप वस दो सौ दे दो। वह दो सौ रु० देकर एक ईंच कागज का टुकड़ा लेकर आजाती है जिस पर उल्टी-सीधी दो चार रेंखायें खीची होती हैं। उन मुल्लाओं के पास बहुत से लोग अपनी जवान लड़कीयों को लेकर जाते है और मुल्ला अपने सामने बैठा कर मुंह से

अन्ट-शन्ट बकता रहता है जिसे वह मंत्र बताता है। बोलते-बोलते लड़की के मुंह पर थूकता है और कहता है अब भूत भाग ज़ायेगा। फिर तावीज देता है और सैंकड़ो रु० ऐंठ लेता है इस प्रकार से हिन्दू लुटता है और मुसलमान लूटता है।

बाजा और आतिश बाजी

इन दोनों से भी हिन्दू खूब लुटता है। विवाह आदि अनेक अवसरों जो हिन्दू बाजा बजवाता है उस के मालिक अधिक तर मुसलमान ही होते है मुसलमान बाजा बजाने को भी कुफ्र मानते हैं। इस देश में अनेक घटनायें घटी हैं जब मस्जिद के सामने से हिन्दूओं का कोई जुलूस निकलता हो और मुसलमानों नें उस पर आक्रमण करके उत्पात मचाया हो। अपनी शादीयों में बाजा बजाना गलत मानते है। मुसलमान कई कार्य ऐसे करता है जिन्हें वह केवल हिन्दुओं को ठगने के लिये करता हैं।

जैसे-१- अपने यहां बाजा बजाना गलत हैं परन्तु हिन्दूओं के यहां सभी अवसरों पर बाजा वे ही बजाते है

२- मुसलमान मूर्त्ति पूजा बुरा मानता है, परन्तु मूर्त्ति बनाना और बेचना बुरा नहीं मानता।

३-मजारों की पूजा वह स्वयं नहीं करते, परन्तु हिन्दूओं से पुजवाकर सारा चढ़ावा खा जाते है।

४-यदि कोई मुसलमान किसी हिन्दू के कहने में आकर कांवर लाने जाता है तो वे उसे जान से मारने की धमकी दे देते हैं। और कांवर बनाने बाले सब मुसलमान ही होते हैं।

५- कोई गरीब मुसलमान कभी मन्दिर में जाकर पूजाकरता है तो मुल्ला-मौलवी उसे भी इस्लाम से वहिस्कार की धमकी देते हैं। जब

कि फिल्मी कलाकर फिल्मों में खूब मन्दिरों में जाकर फूल चढ़ाते हैं और मूर्त्तियों के सामने झूम-झूम कर गाते हैं। उन के लिऐ कोई फतवा जारी नहीं किया जाता,क्योंकि वे लोग इन फतवा देने वालों को मोटी रकम देते हैं।

हिन्दू अपने विवाह के अवसर पर या दीपावली जैसे अनेक खुशी के अवसरों पर आतिशबाजी करते है। इस के बनाने वाले ६५ प्रतिशत मुसलमान ही होते हैं। दिपावली के दिन तो भारत में अरबों रु० के पटाखे छोड़े जाते है जिससे वायुमण्डल बहुत दूषित होता है। और उनकी कई अरब रु० कि आमदनी होती है इस से मुसलमानों को सबसे बड़ा लाभ यह होता है कि आतिशबाजी के नाम पर पटाखे बनाने के बहाने से वे विस्फोटक सामग्री ही घर में रखते हैं इस से उन्हें बम बनाने में बड़ी आसानी होती है।

इन पांच प्रकार से हिन्दू मुद्दतों से लुटता आ रहा है। आर्य समाज के बहुत समझाने पर भी इसकी समझ में नहीं आती। परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि इन्हें बुध्दि प्रदान करे और लुटने से बचाकर एक निराकार और सर्वव्यापक ईश्वर की उपासना करके मानव जीवन के मुख्य उद्देश्य को पूरा करे।

।। इति ।।

आर्य समाज के नियम

१. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

२. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर,सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासनां करनी योग्य है।

३. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

४. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

५. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।

६. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक, और सामाजिक उन्नति करना।

७. सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।

८. अविद्या का नाश विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

९. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए। किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

१०. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

लेखक की अन्य रचनाएं

(1) गांधी और नेहरू भारत के लिये वरदान या अभिशाप?
(2) गांधी जी की छाया में हिन्दू और हिन्दुस्तान
(3) चुनिन्दा शेर-ओ-शायरी
(4) भागवत की असलियत
(5) गुरुओं की असलियत
(6) छः राक्षसों को मारो
(7) प्रभु चिन्तन
(8) ये देश के नेता
(9) हिन्दुओं की लूट
(10) हिन्दू विनाश की ओर
(11) आजादी का देवता
(12) अम्बाला की काल कोठरी
(13) ईश्वर सिद्धि
(14) ऐतिहासिक प्रेरक कहानियाँ
(15) वीर पूजा